मैं खुद में खुद को ढूंढ रहा

मैं खुद को पाने की चाह में आँखों को हूँ मूँछ रहा |
मैं खुद में खुद को ढूंढ रहा ||

मैं अंजनी लंबी गलियों में अकेले चला करता हूँ |
इस झूठे जग के सामने मेले से डरा करता हूँ ||

जग नाच रहा जिन गीतों पर उन गीतों को जंचा करता हूँ |
खुद को पाने की चाह में अकेले मैं नाचा करता हूँ ||

यह कोई सुर नहीं,कोई ताल नहीं ,कोई गीत नहीं, कोई बात नहीं |
जग पाना चाहता जिन चीज़ों को वह मेरे जीवन भोर नहीं वह मेरे जीवन की रात नहीं ||

मैं सूर्य उदय को देख उम्मीदों को जगाया करता हूँ
अपने सपनों की कल्पनाओं को दृश्यों में सजाया करता हूँ

सुनो मुझे ओ जग वालों में अलबेला सा पागल हूँ
मैं अपने मन की तरंगों को मृदंग सा बजाया करता हूँ

बस इतना सा अफ़सोस है कि मैं खुद को ना पहचान सका |
क्या जीवन का उद्देष्य है यह अभी तक ना जान सका ||

आधी आधी रातों को जो स्वप्न मुझे आते हैं |
वह स्वप्न नहीं सवाल है जो अक्सर मुझे सताते हैं ||

मन मेरा मुझसे पूछ रहा क्या जीवन का उद्देश्य तेरा है |
जब मैं खुद ही नहीं जान सका तो क्या ही कसूर मेरा है ||

सवालों से पिछआ छुड़ाने के लिए उलझनों की सीढ़ियाँ चढ़ा करता हूँ |

आधी आधी रातों को निंदो से लाडा करता हूँ ||

मिल सकते हैं सवालों के जवाब जहाँ मैं अक्सर जाया वाह करता हूँ |
मगर सवालों के जवाब पाने में असफ़ल रहा करता हूँ ||

एक नए दिन के साथ नहीं रोशनी की शुरुआत होती है |
सवालों के जवाब तो मिलते नहीं नए सवालों से मुलाकात होती है||

मैं अपने मन के सवालों की माला को शब्दों में हूँ बूंद रहा|
मैं खुद में खुद को ढूंढ रहा |

बाज की उड़ान

जब बाज को उड़ता देखता हूँ
मन में सवाल आते है
ये इतना निडर कैसे है?,
क्यों इसमें किसी का भय नहीं?,
इसमें इतनी शक्ति आती कहाँ से है?
मन में सवाल बहुत आते हैं मगर जवाब एक ही पता हूँ (आत्म सम्मान)

जब मानव की तुलना बाज से करता हूँ
तो सोचता हूँ
क्या मानव अपनी कमियों को कष्ट देकर नष्ट नहीं कर सकता?
जैसे बाज नये पंखों को पाने की इच्छा से पुराने पंखों को कष्ट देकर तोड़ देता है
क्या मानव अपने अंदर अछाई की उत्पति के लिए बुराई को नहीं तोड़ सकता?
बाज को गुलामी मंजूर नहीं
क्या मानव भी गुलामी का विरोध नहीं कर सकता
अगर नहीं तो क्यों नही?
क्या उसमें आत्मा सम्मान नहीं है?
क्या मानव बाज से प्रेरणा लेकर गलतियों से सीख नहीं ले सकता?
मानव अपने सुविधा क्षेत्र से आगे क्यों नहीं बढ़ता?
जैसा बाज खराब मौसम में भी एक ऊँची उड़ान भरता है
तो मानव भी समाज में अच्छे विचार प्रकट क्यों नहीं करता?

मानव और बाज की तुलना में बहुत सवाल सामने आए
हर क्षेत्र में बाज को मानव से आगे पाया
इन सब सवालों के बीच एक सवाल और उठा मानव वह सब क्यों नहीं करता जो बाज कर सकता है
तो जवाब में बस इतना ही पाया कि वह एक आज़ाद परिंदा है और हम मानव |

मिकी पासी